International Journal of Multidisciplinary Research and Development 2015; 2(2): 381-383

International Journal of Multidisciplinary Research and Development

IJMRD 2015; 2(2): 381-383
www.allsubjectjournal.com
Impact factor: 3.672
Received: 03-02-2015
Accepted: 18-02-2015
E-ISSN: 2349-4182
P-ISSN: 2349-5979

मनीषा शर्मा
विभागाध्याक्ष जनसंचार
चोईथराम कालेज, इन्दौर

योगिता राठौर
सहा.प्राध्या. एनीबिसेन्ट कॉलेज
इन्दौर (म.प्र.)

Correspondence:
मनीषा शर्मा
विभागाध्याक्ष जनसंचार
चोईथराम कालेज, इन्दौर

विज्ञान पत्रकारों से अपेक्षाएँ

मनीषा शर्मा, योगिता राठौर

लोकतान्त्रिक प्रषासन का एक अविभाज्य अंग पत्रकारिता है। बर्के ने प्रेस को चतुर्थ राज्य की संज्ञा दी है। पत्रकारिता के लिए अंग्रेजी मे ''जर्नेलिज्म'' शब्द का प्रयोग किया जाता है जो ''जर्नल' से निकला है। जिसका शब्दिक अर्थ ''दैनिक'' है। दिन प्रतिदिन के क्रियाकलापों, सरकारी बैठकों का विवरण ''जर्नल'' मे रहता है। 17 वीं एवं 18 वीं शदी मे पीरियॉडिकल के स्थान पर लैटिन शब्द ''डियूरनल'' और ''जर्नल'' शब्दो के प्रयोग हुए ''जर्नल'' से बना 'जर्नलिज्म'' शब्द अपेक्षाकृत व्यापक शब्द है। समाचार पत्रों एवं विविधकालिक पत्रिकाओं के सम्पादन एवं लेखन और तत्संबंधी कार्यो को पत्रकारिता के अन्तर्गत रखा गया। इस प्रकार समाचारों का संकलन प्रसारण विज्ञापन की कला एवं पत्र का व्यावसायिक संगठन पत्रकारिता है। समसामयिक गतिविधियों के संचार से सम्बंध सभी साधन, चाहे वे रेडियों हो या टेलीविजन इसी के अन्तर्गत समाहित है।
चैम्बर और न्यू वेब्स्टर्स डिक्षनरी के अनुसार ''प्रकाषन, सम्पादन, लेखन एवं प्रसारणयुक्त समाचार माध्यम का व्यवसाय ही पत्रकारिता है। लोकमानस की अभिव्यक्ति की जीवंत विधा ही पत्रकारिता है जिससे सामायिक सत्य मुखरित होते है। समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्व बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते है।'' विकास विज्ञान से ही संभव है। स्वास्थ, षिक्षा, परिवहन आवास, ऊर्जा, तकनीक आदि सभी विज्ञान से जुडे है। इन्ही साधनों से मानव एक–दुसरे के निकट आता है। इन्ही के बल पर कोई राष्ट्र विकास एवं उन्नति के सोपानों को तय करता है। आज हमारे देष मे विज्ञान पत्रकारिता का भी काफी विकास हुआ है और विकास से जुड़कर पत्रकारिता मानव जीवन को उन्नत बनाने के लिए साधनारत है। 'विज्ञान' 'विज्ञान प्रगति' आदि अनेक पत्रों द्वारा विज्ञान पत्रकारिता को समृद्ध किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त अन्य पत्र–पत्रिकाओं मे भी विज्ञान विषयक सामग्री दी जाती है।
विज्ञान पत्रकारिता का क्षेत्र ओर अर्थ व्यापक है। अपनी इसी व्यापकता के कारण विज्ञान पत्रकारिता कई रूपों मे विकसित हुई है। विज्ञान के क्षेत्र मे रोज हो रहे शोधों, अविष्कारों, नई विधियों, नए उपकरणो एवं विज्ञान से संबंधित कार्यक्रमों की सूचना देना विज्ञान पत्रकारिता का काम है लेकिन काम महज सूचना देना ही नहीं बल्कि इससे भी इतर और है। हर वैज्ञानिक क्षेत्र मे हुई किसी खोज, उपलब्धि, शोध के अंदर झाकना, उसकी पृष्ठभूमि को समझना और उसकी संभावनाओ को बताना ही दरअसल विज्ञान पत्रकारिता है।

विज्ञान लेखन के लिए पत्रकारो को तीन बातो का ध्यान रखना आवष्यक है।
1. विज्ञान विषयक सामग्री को पढ़ना।
2. देखना, समझना और सोचना।
3. उसे क्रमबद्ध तथा सुव्यस्थिति दंग से अभिव्यक्त करना

एक विज्ञान पत्रकार से सदैव यह अपेक्षा की जाती है कि विज्ञान लेखन को अन्य सामान्य रिर्पोटिंग की तरह न लेकर उसमे अपने अवलोकन और चिंतन मनन को शामिल कर उसे रोचक तरीके से प्रस्तुत करें। इसी के साथ लेखन मे क्रमबंद्ध को सुनिष्चित कर प्रत्येक बिंदु को व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत करें।
उसे सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि विज्ञान विषयक समाचार या आलेख का आमुख (इन्ट्रो) जटिल या बोझिल न हो। उसमें इन्ट्रो के सभी आवष्यक गुण होने चाहिए। उसके बाद शेष समाचार में नई जानकारी और उसके बाद विषिष्ट जानकारी आनी चाहिए। विज्ञान समाचारों मे उदाहरणों तथा वक्तव्यों का संतुलित समावेष करने से उनकी रोचकता बढ़ जाती है। इन्हे सदैव जटिलता, निरर्थक, शब्दजाल, क्लिष्टता से दूर रखना चाहिए।
लोकतान्त्रिक प्रषासन का एक अविभाज्य अंग पत्रकारिता है। बर्फे ने प्रेस को चतुर्थ राज्य की संज्ञा दी है। पत्रकारिता के लिए अंग्रेजी मे ''जर्नलिज्म'' शब्द का प्रयोग किया जाता है जो ''जर्नल' से निकला है। जिसका शब्दिक अर्थ ''दैनिक'' है। दिन प्रतिदिन के क्रियाकलापों, सरकारी बैठकों का

विवरण ''जर्नल'' मे रहता है। 17 वीं एवं 18 वीं सदी मे पीरियॉडिकल के स्थान पर लैटिन शब्द ''डियूरनल'' और ''जर्नल'' शब्दो के प्रयोग हुए ''जर्नल'' से बना 'जर्नलिज्म'' शब्द अपेक्षाकृत व्यापक शब्द है। समाचार पत्रों एवं विविधकालिक पत्रिकाओं के सम्पादन एवं लेखन और तत्संबंधी कार्यो को पत्रकारिता के अन्तर्गत रखा गया। इस प्रकार समाचारों का संकलन प्रसारण विज्ञापन की कला एवं पत्र का व्यावसायिक संगठन पत्रकारिता है। समसामयिक गतिविधियों के संचार से सम्बन्धित सभी साधन, चाहे वे रेडियों हो या टेलीविजन इसी के अन्तर्गत समाहित है।

चैम्बर और न्यू वेब्स्टर्स डिक्षनरी के अनुसार ''प्रकाषन, सम्पादन, लेखन एवं प्रसारणयुक्त समाचार माध्यम का व्यवसाय ही पत्रकारिता है। लोकमानस की अभिव्यक्ति की जीवंत विधा ही पत्रकारिता है जिससे सामायिक सत्य मुखरित होते है। समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्व बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते है।'' [1]

जन संवेदना के संचार का सर्वाधिक सहजता से सुलभ और प्रभावकारी जन–माध्यम ही पत्रकारिता है। समाज में मानव–मूल्यों को स्थापित करने के साथ जन–जीवन को विकास के पथ पर अग्रसर करना पत्रकारिता का दायित्व है।

विकास विज्ञान से ही संभव है। स्वास्थ्य, षिक्षा, परिवहन आवास, ऊर्जा, तकनीक आदि सभी विज्ञान से जुडे है। इन्ही साधनों से मानव एक–दुसरे के निकट आता है। इन्ही के बल पर कोई राष्ट्र विकास एवं उन्नति के सोपानों को तय करना है। आज हमारे देष मे विज्ञान पत्रकारिता का भी काफी विकास हुआ है और विकास से जुड़कर पत्रकारिता मानव जीवन को उन्नत बनाने के लिए साधनारत है। 'विज्ञान' 'विज्ञान प्रगति' आदि अनेक पत्रिकाओं द्वारा विज्ञान पत्रकारिता को समृद्ध किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त अन्य पत्र–पत्रिकाओं मे भी विज्ञान विषयक सामग्री दी जाती है।

''विज्ञान पत्रकारिता से आषय कुछ हद तक अनुसंधान पत्रकारिता से भी है। मनुष्य की जबसे इस धरा पर उत्पत्ति हुई वह विकास के दौर से गुजर रहा है। विकास के इस दौर मे उसने जिस–चीज की आवष्यकता महसूस की, उनकी उत्पत्ति भी की। आज हम कम्प्यूटर के युग मे जी रहे है। पलक झपकते ही इंटरनेट के माध्यम से सारी दुनिया मे सूचनाओं का जाल फैल जाता है। विज्ञान ओर पत्रकारिता मे एक समानता है। विज्ञान भी कब, क्यों कहॉ, कैसे, कौन पर टिका है और पत्रकारिता की मुख्य विधा रिपोर्टिंग की शुरूआत भी इन्ही पांच कारणो से होती है। कहने का तात्पर्य पत्रकारिता हो या विज्ञान दोनो मे ही 'जिज्ञासा' और अनुसंधान की मुख्य भूमिका होती है।''[2]

विज्ञान पत्रकारिता का क्षेत्र और अर्थ व्यापक है। अपनी इसी व्यापकता के कारण विज्ञान पत्रकारिता कई रूपों मे विकसित हुई है। विज्ञान के क्षेत्र मे रोज हो रहे शोधों, अविष्कारों, नई विधियों, नए उपकरणो एवं विज्ञान से संबंधित कार्यक्रमों की सूचना देना विज्ञान पत्रकारिता का काम है लेकिन इसका काम महज सूचना देना ही नहीं बल्कि इससे भी इतर और है। हर वैज्ञानिक क्षेत्र मे हुई किसी खोज, उपलब्धि, शोध के अंदर झांकना, उसकी पृष्ठभूमि को समझना और उसकी संभावनाओ को बताना ही दरअसल विज्ञान पत्रकारिता है।

डॉ. ए.जॉन. नाइट के अनुसार– ''समाचार पत्र, पत्रिकाओं, आकाषवाणी, दूरदर्षन तथा अन्य प्रचार माध्यमों के लिए वैज्ञानिक समाचारों, विचारो एवं सूचनाओं की रिपोर्टिंग, लेखन, संपादन और प्रस्तुतीकरण से सम्बद्ध कार्य करना विज्ञान पत्रकारिता है।''

विज्ञान से संबंधित सवालो को जनता तक पहुॅचाना और नई जानकारी देना ही विज्ञान पत्रकारिता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रचार, प्रसार, प्रकाषन और लेखन को सुनियोजित करने में विज्ञान पत्रकारिता का अपना विषिष्ट महत्व है।

विज्ञान पत्रकारिता को दो भागों मे बांटा जा सकता है।

1. व्यावसायिक पत्रकारिता।
2. सामान्य पत्रकारिता।

दोनो का पाठकवर्ग अलग होता है। यदि वैज्ञानिक शोध व खोजो से जुड़ी जानकारीयाँ सिर्फ विज्ञानकर्मियो, वैज्ञानिकों या विज्ञान विषय के विषिष्ट छात्रों या अध्यापकों के लिए ही होती तो विज्ञान पत्रकार भी आमतोर पर स्वयं भी इन्ही वर्गो का होगा और इस प्रकार की विषयवस्तु जटिल सिद्धातों, प्रणालियों, विष्लेषणो तथा गहन सूत्रों पर आधारित होगी। इन विषयों पर केन्द्रित पत्रिकाएं विष्वविद्यालयो, अनुसंधान व षोधकेन्द्रो, वैज्ञानिक संगठनों तथा तकनीकी समीतियों द्वारा ही प्रकाषित की जाती है।

परंतु आम पाठक के लिए विज्ञान पत्रकारिता का स्वरूप समान्य व अलग होता है। इन पाठकों का उद्धेष्य विज्ञान जगत मे हो रहे परिवर्तनों विकास और अनुसंधान को जानने के साथ–साथ वैज्ञानिक पहलुओ की समझ बढाना होता है। इसी के साथ आम लोगो को इन आविष्कारों व शोधों के अच्छे व बुरे नतीजो के प्रति अवगत कराना भी होता है।

इस प्रकार लक्षित पाठक वर्ग के अनुसार विज्ञान पत्रकारों को उपरोक्त दो वर्गो मे विभाजित कर उसी के अनुसार सूचना प्रेषण का कार्य किया जा सकता है।

डॉ. मनोज कुमार पटैरिया ने विज्ञान लेखन के लिए चार आवष्यक तत्वों को रेखाकिंत किया :–

1. हिन्दी भाषा का ज्ञान 2. लेखन क्षमता 3. वैज्ञानिक जानकारी 4. हिन्दी मे विज्ञान का प्रचार प्रसार करने की तीव्र अभिलाषा '' [3]

वर्तमान समय मे विज्ञान विषयक पत्रिकाएं तो निकल रही है। परन्तु उनका लक्षित जनसमूह सीमित है। अतः ऐसी स्थिति मे यह जरूरी हो जाता है कि प्रमुख समाचार पत्रों, रेडियो, टी.वी. फिल्म जैसे माध्यमों द्वारा विज्ञान से संबंधित जानकारी आम लोगों तक पहुॅचाई जाये इस कार्य हेतू विज्ञान पत्रकारों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि विज्ञान जैसे जटिल विषय और इससे संबंधित शोधों, आविष्कारों को उसे आमजन की भाषा में रोचक तरीके से उन तक पहुॅचाना है ताकि वे उसका ज्यादा से ज्यादा लाभ ले सके।

विज्ञान लेखन के लिए पत्रकारों को तीन बातो का ध्यान रखना आवष्यक है।

1. विज्ञान विषयक सामग्री को पढ़ना।
2. देखना, समझना और सोचना।
3. उसे क्रमबद्ध तथा सुव्यस्थित ढंग से अभिव्यक्त करना

एक विज्ञान पत्रकार से सदैव यह अपेक्षा की जाती है कि विज्ञान लेखन को अन्य सामान्य रिर्पोटिंग की तरह न लेकर उसमे अपने अवलोकन और चिंतन मनन को शामिल कर उसे रोचक तरीके से प्रस्तुत करें। इसी के साथ लेखन मे क्रमबंद्ध को सुनिष्चित कर प्रत्येक बिंदु को व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत करें। उसे सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि विज्ञान विषयक समाचार या आलेख का आमुख (इन्ट्रो) जटिल या बोझिल न हो। उसमें इन्ट्रो के सभी आवष्यक गुण होने चाहिए। उसके बाद शेष समाचार में नई जानकारी और उसके बाद विषिष्ट जानकारी आनी चाहिए। विज्ञान समाचारों मे उदाहरणों तथा वक्तव्यों का संतुलित समावेष करने से उनकी रोचकता बढ़ जाती है। इन्हे सदैव जटिलता, निरर्थक, शब्दजाल, क्लिष्टता से दूर रखना चाहिए।

न्यूयार्क टाईम्स के विज्ञान लेखन एडवर्ड एडसन कहते है कि विज्ञान लेखन का आवष्यक गुण यह है कि वह गूढ़ वैज्ञानिक सिद्धांतो की अपने दिमाग मे विवेचना करें और उसे पठनीय तथा समझ योग्य रूप दे। विज्ञान को समझने और उसे अभिव्यक्त

करने की क्षमता के साथ ही विज्ञान पत्रकार को विज्ञान का ज्ञान और भाषा पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए। भाषा ऐसी होनी चाहिए जो लेखक के इषारों पर चले। इसी के साथ विज्ञान पत्रकार को व्याकरण, भाषा विज्ञान तकनीकी शब्दों, शब्द–विन्यास के ज्ञान के साथ ही मुद्रण, प्रोडक्षन व प्रचार तकनीकों की भी जानकारी होनी चाहिए। उसमें तत्काल निर्णय लेने की क्षमता होनी चाहिए। इनकी स्मरण शक्ति अत्यंत प्रखर होनी चाहिए। उसे हमेषा विज्ञान की नई जानकारी की खोज और उसके प्रस्तुतीकरण मे तत्पर रहना चाहिए।

''भारतीय विज्ञान लेखक संघ के सचिव श्री तारिक बदर के अनुसार एक विज्ञान लेखक में पत्रकारिता के सभी आयामों के साथ–साथ वैज्ञानिक सोच का होना अति आवष्यक है। वास्तव में विज्ञान पत्रकार के लिए अपेक्षित है कि वह गुढ़ वैज्ञानिक में विज्ञान वस्तु को सरल व आम बोलचाल की भाषा में अपने पाठकों के सामने प्रस्तुत करें। यह प्रस्तुतिकरण रोचक ढ़ंग से बोझिल शब्दजाल से बचते हुए गतिषीलता बनाएं रखते हुए हो तो अच्छा रहेगा। इसलिए विज्ञान लेखक को साहित्य की जानकारी होना भी वांछनीय है। वैज्ञानिक सूचना स्त्रोतों एवं देष–विदेष के वैज्ञानिक एवं तकनीकी तन्त्र की जानकारी भी जरूरी है।'' [4]

भारत में वैज्ञानिक शोध के अनेक केन्द्र है जिनमें मौलिक या व्यावहारिक विषयों पर अनेक अनुसंधान कार्य चल रहे है। जैसे – अखिल भारतीय विज्ञान आकादमी, अनुसंधान एवं विकास निगम, भाभा इंस्टीट्यूट, राष्ट्रीय अनुसंधान एवं विकास निगम, वैज्ञानिक संस्थानों से जुड़े वैज्ञानिक भी विभिन्न विज्ञान सम्मेलनों कार्यषालाओं में भारत आते रहते है। जिससें हमें अन्तर्राष्ट्रीय जानकारी समय–समय पर मिलती रहती है।

विज्ञान पत्रकारों के कर्त्तव्यः–

- विज्ञान लेखन हेतु तथ्यों की प्रमाणिकता का बड़ा महत्व है इसलिए ऐसी सामग्री का प्रकाषन या प्रसारण न करे जिसमें किसी प्रकार का संदेह हो।
- यदि वक्तव्य या सूचना देने वाला अपना नाम प्रकाषित नहीं करवाना चाहता तो इसका नाम कदापि न छापे।
- यदि भूल वष कोई गलत जानकारी, सूचना या वक्तव्य प्रकाषित हो जाए तो तत्काल उसका खण्डन जरूर प्रकाषित करें।
- अपने निजी स्वार्थो हेतु अपने पद का या उसके प्रभाव का इस्तेमाल करना अवांछनीय है।
- विज्ञान पत्रकार को सदैव नई ज्ञानोपयोगी वैज्ञानिक जानकारिंया देने हेतु हमेषा तत्पर रहना चाहिए।
- विज्ञान पत्रकार को शहरी लोगो हेतु उपयोगी वैज्ञानिक जानकारी के साथ–साथ ग्रामीण व आम जन–जीवन पर आधारित विज्ञान पर भी जानकारी तथा रचनात्मक पक्ष पर अधिक ध्यान दिया जाए।
- एक विज्ञान पत्रकार को सदैव अध्ययनषील होना चाहिये उसे अपने ज्ञान को निरन्तर राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाषित पत्रिकाओं, रिपोर्ट के द्वारा अपडेट रखना चाहिए।
- विज्ञान लेखन मे तकनीकी शब्दों का प्रयोग करते वक्त उसके अर्थ व संदर्भ से पाठकों को जरूर परिचित कराए।

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि विज्ञान पत्रकारिता का क्षेत्र वर्तमान समय में ओर भी अधिक व्यापक होता जा रहा है। अपनी इस व्यापकता के कारण विज्ञान पत्रकारिता अपने नए आयामों को छुती जा रही है जैसे वैज्ञानिक शोध, अविष्कार, नई विधियों, नए उपकरणों एवं विज्ञान संबंधित कार्यक्रमों की सूचना देना विज्ञान पत्रकारिता का ही कार्य है। वर्तमान समय मे विज्ञान विषयक पत्रिकाएं तो निकल रही है। परन्तु वह कुछ ही पाठक वर्ग तक पहुंच पाती है अतः एसी स्थिति में यह जरूरी हो जाता है कि प्रमुख समाचार पत्रों, रेडियों, टी.वी चेनल आदि माध्यमों द्वारा विज्ञान से संबंधित जानकारी जन साधारण तक पहुचाई जाये इस कार्य हेतु विज्ञान पत्रकारों की भूमिका ओर भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। इसलिए पत्रकारो मे पत्रकारिता से संबंधित सभी आवष्यक गुणों का समावेष अपेक्षित है। विज्ञान पत्रकारों को प्रतिभावान, धैर्यवान तथा कर्तव्यषील होना चाहिए। जिससे जन साधारण तक व्यवस्थित एवं सही वैज्ञानिक सूचनांए पहुंच सके।

संदर्भ ग्रंथ ::

1. सम्पूर्ण पत्रकारिता/डॉ. अर्जुन तिवारी/ पृ. 2
2. रिर्पोटिंग के विविध आयाम/सं – विजया पाठक/ पृ. 316
3. हिन्दी विज्ञान पत्रकारिता/डॉ. मनोज पटैरिया/ पृ.–108
4. विज्ञान पत्रकारिता/डॉ. मनोज पटौरिया/पृष्ठ क्र. 148